

༡༣། རྩི་བཅུ་འཕྲོ་བཟང་རྟ་བྱངས་ཀྱི་གསུང་འབུམ་མ་པའི་དཀར་ཆག་བཞུགས་སོ། །

XVII Боть

558 цаас

TI447 - 001

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

1. 2. 3. 4. 5. 6. 7. 8. 9. 10. 11. 12. 13. 14. 15. 16. 17. 18. 19. 20. 21. 22. 23. 24. 25. 26. 27. 28. 29. 30. 31. 32. 33. 34. 35. 36. 37. 38. 39. 40. 41. 42. 43. 44. 45. 46. 47. 48. 49. 50. 51. 52. 53. 54. 55. 56. 57. 58. 59. 60. 61. 62. 63. 64. 65. 66. 67. 68. 69. 70. 71. 72. 73. 74. 75. 76. 77. 78. 79. 80. 81. 82. 83. 84. 85. 86. 87. 88. 89. 90. 91. 92. 93. 94. 95. 96. 97. 98. 99. 100.

9

1. 1. 2. 3. 4. 5. 6. 7. 8. 9. 10. 11. 12. 13. 14. 15. 16. 17. 18. 19. 20. 21. 22. 23. 24. 25. 26. 27. 28. 29. 30. 31. 32. 33. 34. 35. 36. 37. 38. 39. 40. 41. 42. 43. 44. 45. 46. 47. 48. 49. 50. 51. 52. 53. 54. 55. 56. 57. 58. 59. 60. 61. 62. 63. 64. 65. 66. 67. 68. 69. 70. 71. 72. 73. 74. 75. 76. 77. 78. 79. 80. 81. 82. 83. 84. 85. 86. 87. 88. 89. 90. 91. 92. 93. 94. 95. 96. 97. 98. 99. 100.

10

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

॥ २० ॥ ॥ १ ॥ ॥ २ ॥ ॥ ३ ॥ ॥ ४ ॥ ॥ ५ ॥ ॥ ६ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ८ ॥ ॥ ९ ॥ ॥ १० ॥ ॥ ११ ॥ ॥ १२ ॥ ॥ १३ ॥ ॥ १४ ॥ ॥ १५ ॥ ॥ १६ ॥ ॥ १७ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १९ ॥ ॥ २० ॥ ॥ २१ ॥ ॥ २२ ॥ ॥ २३ ॥ ॥ २४ ॥ ॥ २५ ॥ ॥ २६ ॥ ॥ २७ ॥ ॥ २८ ॥ ॥ २९ ॥ ॥ ३० ॥ ॥ ३१ ॥ ॥ ३२ ॥ ॥ ३३ ॥ ॥ ३४ ॥ ॥ ३५ ॥ ॥ ३६ ॥ ॥ ३७ ॥ ॥ ३८ ॥ ॥ ३९ ॥ ॥ ४० ॥ ॥ ४१ ॥ ॥ ४२ ॥ ॥ ४३ ॥ ॥ ४४ ॥ ॥ ४५ ॥ ॥ ४६ ॥ ॥ ४७ ॥ ॥ ४८ ॥ ॥ ४९ ॥ ॥ ५० ॥ ॥ ५१ ॥ ॥ ५२ ॥ ॥ ५३ ॥ ॥ ५४ ॥ ॥ ५५ ॥ ॥ ५६ ॥ ॥ ५७ ॥ ॥ ५८ ॥ ॥ ५९ ॥ ॥ ६० ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ६२ ॥ ॥ ६३ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६६ ॥ ॥ ६७ ॥ ॥ ६८ ॥ ॥ ६९ ॥ ॥ ७० ॥ ॥ ७१ ॥ ॥ ७२ ॥ ॥ ७३ ॥ ॥ ७४ ॥ ॥ ७५ ॥ ॥ ७६ ॥ ॥ ७७ ॥ ॥ ७८ ॥ ॥ ७९ ॥ ॥ ८० ॥ ॥ ८१ ॥ ॥ ८२ ॥ ॥ ८३ ॥ ॥ ८४ ॥ ॥ ८५ ॥ ॥ ८६ ॥ ॥ ८७ ॥ ॥ ८८ ॥ ॥ ८९ ॥ ॥ ९० ॥ ॥ ९१ ॥ ॥ ९२ ॥ ॥ ९३ ॥ ॥ ९४ ॥ ॥ ९५ ॥ ॥ ९६ ॥ ॥ ९७ ॥ ॥ ९८ ॥ ॥ ९९ ॥ ॥ १०० ॥

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

34

[illegible]

॥ १७ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १९ ॥ ॥ २० ॥ ॥ २१ ॥ ॥ २२ ॥ ॥ २३ ॥ ॥ २४ ॥ ॥ २५ ॥ ॥ २६ ॥ ॥ २७ ॥ ॥ २८ ॥ ॥ २९ ॥ ॥ ३० ॥ ॥ ३१ ॥ ॥ ३२ ॥ ॥ ३३ ॥ ॥ ३४ ॥ ॥ ३५ ॥ ॥ ३६ ॥ ॥ ३७ ॥ ॥ ३८ ॥ ॥ ३९ ॥ ॥ ४० ॥ ॥ ४१ ॥ ॥ ४२ ॥ ॥ ४३ ॥ ॥ ४४ ॥ ॥ ४५ ॥ ॥ ४६ ॥ ॥ ४७ ॥ ॥ ४८ ॥ ॥ ४९ ॥ ॥ ५० ॥ ॥ ५१ ॥ ॥ ५२ ॥ ॥ ५३ ॥ ॥ ५४ ॥ ॥ ५५ ॥ ॥ ५६ ॥ ॥ ५७ ॥ ॥ ५८ ॥ ॥ ५९ ॥ ॥ ६० ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ६२ ॥ ॥ ६३ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६६ ॥ ॥ ६७ ॥ ॥ ६८ ॥ ॥ ६९ ॥ ॥ ७० ॥ ॥ ७१ ॥ ॥ ७२ ॥ ॥ ७३ ॥ ॥ ७४ ॥ ॥ ७५ ॥ ॥ ७६ ॥ ॥ ७७ ॥ ॥ ७८ ॥ ॥ ७९ ॥ ॥ ८० ॥ ॥ ८१ ॥ ॥ ८२ ॥ ॥ ८३ ॥ ॥ ८४ ॥ ॥ ८५ ॥ ॥ ८६ ॥ ॥ ८७ ॥ ॥ ८८ ॥ ॥ ८९ ॥ ॥ ९० ॥ ॥ ९१ ॥ ॥ ९२ ॥ ॥ ९३ ॥ ॥ ९४ ॥ ॥ ९५ ॥ ॥ ९६ ॥ ॥ ९७ ॥ ॥ ९८ ॥ ॥ ९९ ॥ ॥ १०० ॥

[illegible]

40

[illegible]

[illegible]

46

[illegible]

[illegible]

武部

53

[illegible]

TI447 - 053

三、

55

[illegible]

卷之四

[illegible]

TI447 - 057

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

TI447 - 075

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय । नमो भगवते वासुदेवाय । नमो भगवते वासुदेवाय ।

[illegible]

[illegible]

[illegible]

85

TI447 - 085

[illegible]

88

[illegible]

Admission

101

[illegible]



ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

106

TI447 - 106

[illegible]

109

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

124

TI447 - 124

རྒྱུགས་སྤུལ་གཅིག་ཡུལ་ཚོགས་སྤུལ་སྤྱོད་ཐུག་པའི་ཆེད་དུ་བཞུགས་ཏེ་མ། དེས་བདག་པོའི་ །གཡུང་དྲུང་རྒྱལ་ཅན་གྱི་ མཛེས་པ་པོ་ནས། གནས་བརྒྱུ་སྤྱོད་མ་ཆེ་ཤིང་པ་རྩི། མཆོག་ལྷུ་ལྟོ་ཐབས་ཐུག་པའི་ཆེད་དུ་བཞུགས་ཏེ་མ། དེས་
 བདག་པོའི་ །མཁའ་རྒྱལ་ཅན་གྱི་ མཛེས་པ་པོ་ནས། རུ་ཆེད་མཁའ་ཆོག་པས་མ་གྲུབ་བཞུགས་ཏེ་མ། རྒྱུ་ལྟོ་ཐབས་ཐུག་པའི་ཆེད་དུ་བཞུགས་ཏེ་མ། དེས་བདག་པོའི་ །ཐིག་རྒྱལ་ཅན་རྣམས་ལ་ཡུ་རྒྱུ་ཆུ་མེད་ཤི། །

132

TI447 - 132

॥ ३५ ॥ ॥ ३६ ॥ ॥ ३७ ॥ ॥ ३८ ॥ ॥ ३९ ॥ ॥ ४० ॥ ॥ ४१ ॥ ॥ ४२ ॥ ॥ ४३ ॥ ॥ ४४ ॥ ॥ ४५ ॥ ॥ ४६ ॥ ॥ ४७ ॥ ॥ ४८ ॥ ॥ ४९ ॥ ॥ ५० ॥ ॥ ५१ ॥ ॥ ५२ ॥ ॥ ५३ ॥ ॥ ५४ ॥ ॥ ५५ ॥ ॥ ५६ ॥ ॥ ५७ ॥ ॥ ५८ ॥ ॥ ५९ ॥ ॥ ६० ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ६२ ॥ ॥ ६३ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६६ ॥ ॥ ६७ ॥ ॥ ६८ ॥ ॥ ६९ ॥ ॥ ७० ॥ ॥ ७१ ॥ ॥ ७२ ॥ ॥ ७३ ॥ ॥ ७४ ॥ ॥ ७५ ॥ ॥ ७६ ॥ ॥ ७७ ॥ ॥ ७८ ॥ ॥ ७९ ॥ ॥ ८० ॥ ॥ ८१ ॥ ॥ ८२ ॥ ॥ ८३ ॥ ॥ ८४ ॥ ॥ ८५ ॥ ॥ ८६ ॥ ॥ ८७ ॥ ॥ ८८ ॥ ॥ ८९ ॥ ॥ ९० ॥ ॥ ९१ ॥ ॥ ९२ ॥ ॥ ९३ ॥ ॥ ९४ ॥ ॥ ९५ ॥ ॥ ९६ ॥ ॥ ९७ ॥ ॥ ९८ ॥ ॥ ९९ ॥ ॥ १०० ॥

138

T1447 - 138

[illegible]

॥ १ ॥ ॥ २ ॥ ॥ ३ ॥ ॥ ४ ॥ ॥ ५ ॥ ॥ ६ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ८ ॥ ॥ ९ ॥ ॥ १० ॥ ॥ ११ ॥ ॥ १२ ॥ ॥ १३ ॥ ॥ १४ ॥ ॥ १५ ॥ ॥ १६ ॥ ॥ १७ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १९ ॥ ॥ २० ॥ ॥ २१ ॥ ॥ २२ ॥ ॥ २३ ॥ ॥ २४ ॥ ॥ २५ ॥ ॥ २६ ॥ ॥ २७ ॥ ॥ २८ ॥ ॥ २९ ॥ ॥ ३० ॥ ॥ ३१ ॥ ॥ ३२ ॥ ॥ ३३ ॥ ॥ ३४ ॥ ॥ ३५ ॥ ॥ ३६ ॥ ॥ ३७ ॥ ॥ ३८ ॥ ॥ ३९ ॥ ॥ ४० ॥ ॥ ४१ ॥ ॥ ४२ ॥ ॥ ४३ ॥ ॥ ४४ ॥ ॥ ४५ ॥ ॥ ४६ ॥ ॥ ४७ ॥ ॥ ४८ ॥ ॥ ४९ ॥ ॥ ५० ॥ ॥ ५१ ॥ ॥ ५२ ॥ ॥ ५३ ॥ ॥ ५४ ॥ ॥ ५५ ॥ ॥ ५६ ॥ ॥ ५७ ॥ ॥ ५८ ॥ ॥ ५९ ॥ ॥ ६० ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ६२ ॥ ॥ ६३ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६६ ॥ ॥ ६७ ॥ ॥ ६८ ॥ ॥ ६९ ॥ ॥ ७० ॥ ॥ ७१ ॥ ॥ ७२ ॥ ॥ ७३ ॥ ॥ ७४ ॥ ॥ ७५ ॥ ॥ ७६ ॥ ॥ ७७ ॥ ॥ ७८ ॥ ॥ ७९ ॥ ॥ ८० ॥ ॥ ८१ ॥ ॥ ८२ ॥ ॥ ८३ ॥ ॥ ८४ ॥ ॥ ८५ ॥ ॥ ८६ ॥ ॥ ८७ ॥ ॥ ८८ ॥ ॥ ८९ ॥ ॥ ९० ॥ ॥ ९१ ॥ ॥ ९२ ॥ ॥ ९३ ॥ ॥ ९४ ॥ ॥ ९५ ॥ ॥ ९६ ॥ ॥ ९७ ॥ ॥ ९८ ॥ ॥ ९९ ॥ ॥ १०० ॥

[illegible]

148

[illegible]

[illegible]

151

[illegible]

[illegible]

155

[illegible]

TI447 - 157

159

TI447 - 159

[illegible]

॥३॥ ॥ वल्लभाय नमः ॥ वल्लभाय नमः ॥ वल्लभाय नमः ॥ वल्लभाय नमः ॥ वल्लभाय नमः ॥
 वल्लभाय नमः ॥ वल्लभाय नमः ॥ वल्लभाय नमः ॥ वल्लभाय नमः ॥ वल्लभाय नमः ॥

164

TI447 - 164

168

TI447 - 168

[illegible]

[illegible]

[illegible]

180

TI447 - 180

[illegible]

[illegible]

185

[illegible]

[illegible]

190

TI447 - 190

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible][illegible]

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीकृष्णाय नमः ॥ श्रीरामाय नमः ॥ श्रीलक्ष्मणाय नमः ॥ श्रीसीतलाय नमः ॥ श्रीहनुमताय नमः ॥ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ श्रीपुत्रभ्यो नमः ॥ श्रीपुत्राभ्यो नमः ॥ श्रीपुत्राभ्यो नमः ॥ श्रीपुत्राभ्यो नमः ॥

[illegible][illegible]

॥५॥ सुमनः हेतुं प्रसन्नं सुखं वाचिनीके । नमः शिवाय ॥

238

TI447 - 238

【附】

239

[illegible]

[illegible]

[illegible]

TI447 - 251

II447 - 252

[illegible]

༢༡ ། རྩོམ་མཉམ་པ་མཆོག་ལྟར་རྟོག་ཏུ་བོ་བསོད་ནམས་གྲགས་པའི་དེམ་སྟོན་པོད་གངས་ལྗོངས་ཀྱི་མཁས་གྲུབ་ཆེན་པོ་ལྟི་གུང་དཔལ་འཛིན་ཏི་ལོད་པ་བཟང་པོ་མཉམ་ཆུ་མཆོག་གི་ཕྱག་ལྗོངས་གི་བྱེད་པ་ཅན་གྱིས་དཔལ་
རྩི་མཛིན་པས་བྱེད་ཀྱི་ཆོས་སྟོན་ཕྱིར་ལྟགས་གཏོང་བར་གྱུར་པའི་མཉམ་དག་ཕྱགས་པ་བྱེད་པས་མཉམ་པོད་དུ་གྲགས་པའི་ལུང་མཆོས་པའི་ཐོབ་པ་ཆོད་པ་ལ། ཁི། པར་རྟེན་པ་གསུམ་པའི་ཆུས་ལྗོངས་ལོད་པ་ཆེན་ཏེ་མཉམ། རྩོམ་གསུམ་གྱི་གཞུང་རྒྱུ་ལུང་
བྱེད་པ་རྟེན་པ་གསུམ་པའི་ཆུང་པའི་ལ་གཏིས་ཏེ་ཐོས་པའི་དུཅན། ཁི། པར་རྟེན་གསུམ་པ་ལྟུག་པོའི་ལྱི་ཆོག་ཁམས་གསུམ་གྱི་ལྟོན་ལོས་པ་ལྟུར་པ་ཆེན་པོ། ཁི། པར་མཉམ་པ་ལོས་པ་དྲག་ལུང་མི་བཟང་གཏུག་པའི་དུག་རྩེ་སེམ་པ་ལྟོ་
བུ། ཁི། པར་རྟེན་པ་གསུམ་པའི་མཉམ་དག་གི་ཐོག་པ་ལོས་པ་ལ། ཁི། པར་རྟེན་གསུམ་པ་ལྟུག་པོའི་ལྱི་ལྟུག་ལོས་པ། ཁི། པར་གསེན་མེ་གསོད་ཀྱི་ལྟུག་པོའི་ལྱི་ལྱུང་ཕྱོར་ལོ་ཆེན་པོའི་ལྱི་ལྟུག་ལ། ཁི། པར་རྟེན་གསུམ་པ་ལྟུག་པོའི་
ལྱི་ཆོག་ལོ་ལོ་ཆེན་པོའི་པར་ཆོད་པ། ཁི། པར་དེ་ལ་མཆོག་པའི་བོད་བྱིས་རྟེན་པ་ལྟུག་ཀྱི་ཆུས་ལྗོངས་སྟོན་པ་ལོས་པ་ལྟུར་པས་མཛད་ཅེས་པ་ལས། རང་བཟོ་མེད་པར་ལྟུར་པའི་མཉམ་པ་ཅན། ཁི། པར་འཛིན་པས་བྱེད་ཀྱི་བཞེན་ལྟུག་པ་གཏུ་རྩེ་བའི་
རིམ་པ་ལྟུར་པར་དབང་ལྟུག་པ་གང་མས་པ། རྩོམ་སྟེན་གྱི་ལོ་གཞི་བཟོ། ཁི། པར་གསེན་མེ་གསོད་ཀྱི་ཆོ་བའི་ལྟགས་པ་ལྟུག་པའི་ཆུ་པ་ལོད་པའི་ལོད་པོ། ཁི། པར་དྲག་པོའི་ལས་ཀྱི་བརྩམ་པ་རྩི་ལའང་པར་བའི་མཆོག་ལ། ཁི། པར་རྩི་མེ་
ཐོད་ཀྱི་ལས་མཉམ་པ་ཅན་པའི་ཕྱི་ལོ་གང་དེས་གྲུབ་ཀྱི་གཞི་བཞེད་པ་ལས། ཁི། པར་འཛིན་པས་བྱེད་ཀྱི་ལྱི་ཆུས་ཀྱི་ཕྱི་ལོ་གཏིས་པའི་ཆོ་བ་ཆོད་པ་ལྟུག་པ་ལས་བློག་པར་ལུས་པའི་བསོད་ནམས་ཀྱི་ཏེ་མ་བཞུག་པ་ལས། ཁི། པར་རྟེན་གསུམ་པ་ལྟུག་པོའི་ལྱི་

[illegible]

260

T1447 - 260

[illegible]

[illegible]

264

[illegible]

[illegible]

[illegible]

TI447 - 275

[illegible]

289

[illegible]

[illegible]

295

TI447 - 295

[illegible]

[illegible]

302

T1447 - 302

306

TI447 - 306

307

[illegible]

[illegible]

[illegible]

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ इति श्रीमद्भगवद्गीतायां अष्टाध्याय प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

[illegible]

ॐ मन्त्राय नमः ॥ सुदुर्लभं यत्किंचिद्देवतायाः स्तुतिं कुरुते तत्तुल्यं भवति ॥
 मन्त्राय नमः ॥ देवतायाः स्तुतिं कुरुते तत्तुल्यं भवति ॥ देवतायाः स्तुतिं कुरुते तत्तुल्यं भवति ॥
 देवतायाः स्तुतिं कुरुते तत्तुल्यं भवति ॥ देवतायाः स्तुतिं कुरुते तत्तुल्यं भवति ॥

[illegible]

[illegible]

332

TI447 - 332

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

347

TI447 - 347

[illegible]

[illegible]

351

TI447 - 351

[illegible]

[illegible]

TI447 - 355

358

TI447 - 356

[illegible]

[illegible]

[illegible]

363

[illegible]

[illegible]

[illegible]

221

१८५२३४५॥ स्त्रियैः स्त्रियास्य रश्मिना भेदः प्रीतिरूपं कृत्वा च । मगधप्रियं तन्मया मे देवतासायं स्त्रियास्तथा भूतकृतम् । येन वदमानम् ॥

374

TI447 - 374

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

ਅਧਿਆਪਕ ਸ੍ਰੀ ਭਗਤ ਸਿੰਘ ਜੀ ਦੇ ਅਨੁਮੋਦਨ ਨਾਲ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ਿਤ।
ਪ੍ਰਕਾਸ਼ਕ ਸ੍ਰੀ ਭਗਤ ਸਿੰਘ ਜੀ ਦੇ ਅਨੁਮੋਦਨ ਨਾਲ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ਿਤ।

[illegible]

[illegible]

[illegible]

॥ ३॥ ॥ १ ॥ ॥ २ ॥ ॥ ३ ॥ ॥ ४ ॥ ॥ ५ ॥ ॥ ६ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ८ ॥ ॥ ९ ॥ ॥ १० ॥ ॥ ११ ॥ ॥ १२ ॥ ॥ १३ ॥ ॥ १४ ॥ ॥ १५ ॥ ॥ १६ ॥ ॥ १७ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १९ ॥ ॥ २० ॥ ॥ २१ ॥ ॥ २२ ॥ ॥ २३ ॥ ॥ २४ ॥ ॥ २५ ॥ ॥ २६ ॥ ॥ २७ ॥ ॥ २८ ॥ ॥ २९ ॥ ॥ ३० ॥ ॥ ३१ ॥ ॥ ३२ ॥ ॥ ३३ ॥ ॥ ३४ ॥ ॥ ३५ ॥ ॥ ३६ ॥ ॥ ३७ ॥ ॥ ३८ ॥ ॥ ३९ ॥ ॥ ४० ॥ ॥ ४१ ॥ ॥ ४२ ॥ ॥ ४३ ॥ ॥ ४४ ॥ ॥ ४५ ॥ ॥ ४६ ॥ ॥ ४७ ॥ ॥ ४८ ॥ ॥ ४९ ॥ ॥ ५० ॥ ॥ ५१ ॥ ॥ ५२ ॥ ॥ ५३ ॥ ॥ ५४ ॥ ॥ ५५ ॥ ॥ ५६ ॥ ॥ ५७ ॥ ॥ ५८ ॥ ॥ ५९ ॥ ॥ ६० ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ६२ ॥ ॥ ६३ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६६ ॥ ॥ ६७ ॥ ॥ ६८ ॥ ॥ ६९ ॥ ॥ ७० ॥ ॥ ७१ ॥ ॥ ७२ ॥ ॥ ७३ ॥ ॥ ७४ ॥ ॥ ७५ ॥ ॥ ७६ ॥ ॥ ७७ ॥ ॥ ७८ ॥ ॥ ७९ ॥ ॥ ८० ॥ ॥ ८१ ॥ ॥ ८२ ॥ ॥ ८३ ॥ ॥ ८४ ॥ ॥ ८५ ॥ ॥ ८६ ॥ ॥ ८७ ॥ ॥ ८८ ॥ ॥ ८९ ॥ ॥ ९० ॥ ॥ ९१ ॥ ॥ ९२ ॥ ॥ ९३ ॥ ॥ ९४ ॥ ॥ ९५ ॥ ॥ ९६ ॥ ॥ ९७ ॥ ॥ ९८ ॥ ॥ ९९ ॥ ॥ १०० ॥

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

410

[illegible]

[illegible]

418

[illegible]

[illegible]

[illegible]

429

[illegible]

432

TI447 - 432

[illegible]

440

TI447 - 440

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

454

TI447 - 454

[illegible]

[illegible]

Aug 2011

463

[illegible]

466

T1447 - 466

[illegible][illegible]

உள்ளுமாயினும் அப்போது நான் எழுதியிருந்த கவிதைகள் மூலம் உங்களுக்குத் தெரியுமா?

[illegible]

[illegible]

471

[illegible]

472

[illegible]

[illegible]

480

TI447 - 480

[illegible]

[illegible]

502

[illegible]

510

TI447 - 510

517

[illegible]

རྩ རྩེ་སྒྲ་མ་རྒྱལ་མཆོག་གཤིས་དང་བཅས་པ་ལ་ཕྱག་མཆོད་པུལ་པའི་ཆོ་གའི་ཕུར་བརྒྱུད་ནི། མཛེས་པ་པོ་སྒྲིམ་པ་མཁའ་རྒྱལ་སྒྲིབ་བཟང་ཆུང་ལྷིམས་རྒྱམ་ཆོ། རྩེ་གནས་པར་རྒྱལ་མཆོད་ཆུང་མཆོད་ཆུང་པ་ཕྱེས་པ། དེས་བདག་
 ལོ། རྩ རྩེ་སྒྲ་མའི་བརྒྱལ་པ་དཔལ་མཛུགས་པའི་སྒྲིམ་པ་མཆོད་ཕུར་བརྒྱུད་ནི། ལུ་ཁུ་རིག་པོ་ཆེ་ཡན་ཆོད་དེ་གསལ་ལྷིག་ཕྱེས་པ། དེ་གསལ་མཆོག་རྒྱལ་དག་དཔལ་ཕྱེས་པ་བརྒྱལ་མཆོད་ཆུང་མཆོད་ཆུང་པ་ཕྱེས་པ། རྩེ་གནས་པར་རྒྱལ་མཆོད་ཆུང་མཆོད་ཆུང་པ་ཕྱེས་པ།
 དེས་བདག་ལོ། རྩ རྩེ་སྒྲ་མའི་བརྒྱལ་པ་དཔལ་མཛུགས་པའི་སྒྲིམ་པ་མཆོད་ཕུར་བརྒྱུད་ནི། མཛེས་པ་པོ་སྒྲིམ་པ་མཁའ་རྒྱལ་དག་དཔལ་ཕྱེས་པ་བརྒྱལ་མཆོད་ཆུང་མཆོད་ཆུང་པ་ཕྱེས་པ། རྩེ་གནས་པར་རྒྱལ་མཆོད་ཆུང་མཆོད་ཆུང་པ་ཕྱེས་པ། དེས་བདག་ལོ།
 རྩ རྩེ་སྒྲ་མའི་བརྒྱལ་པ་དཔལ་མཛུགས་པའི་སྒྲིམ་པ་མཆོད་ཕུར་བརྒྱུད་ནི། མཛེས་པ་པོ་སྒྲིམ་པ་མཁའ་རྒྱལ་དག་དཔལ་ཕྱེས་པ་བརྒྱལ་མཆོད་ཆུང་མཆོད་ཆུང་པ་ཕྱེས་པ། རྩེ་གནས་པར་རྒྱལ་མཆོད་ཆུང་མཆོད་ཆུང་པ་ཕྱེས་པ། དེས་བདག་ལོ།

527

[illegible]

530

T1447 - 530

531

TI447 - 531

॥ गङ्गा'य'द'वर'के'र'ग'द'वर'गुण'स'य'। सु'ग'द'ग'द'वर'के'र'गुण'स'य'। वे'द'भा'वर'य'मे'द्वि'दे'वि'गुण'स'य'। स्मि'दे'वि'म'म'ल'र'गुण'स'य'। के'न'प्र'द'वर'के'र'गुण'स'य'।
 ग'स'र'य'द'य'प'र'दे'र'गुण'स'य'। य'वे'र'स'य'द'य'प'र'दे'र'गुण'स'य'। सु'ग'स'र'म'स'य'द'य'प'र'दे'र'गुण'स'य'। स्मि'दे'वि'म'म'ल'र'गुण'स'य'। के'न'प्र'द'वर'के'र'गुण'स'य'।
 य'प्र'द'र'दे'र'। के'न'प्र'द'वर'के'र'गुण'स'य'। य'प्र'द'र'दे'र'। के'न'प्र'द'वर'के'र'गुण'स'य'। स्मि'दे'वि'म'म'ल'र'गुण'स'य'। के'न'प्र'द'वर'के'र'गुण'स'य'।
 मे'द'वर'के'र'गुण'स'य'। मे'द'वर'के'र'गुण'स'य'। मे'द'वर'के'र'गुण'स'य'। मे'द'वर'के'र'गुण'स'य'। मे'द'वर'के'र'गुण'स'य'। मे'द'वर'के'र'गुण'स'य'। मे'द'वर'के'र'गुण'स'य'।
 ॥ सु'ग'द'ग'द'वर'के'र'गुण'स'य'। सु'ग'द'ग'द'वर'के'र'गुण'स'य'। सु'ग'द'ग'द'वर'के'र'गुण'स'य'। सु'ग'द'ग'द'वर'के'र'गुण'स'य'। सु'ग'द'ग'द'वर'के'र'गुण'स'य'। सु'ग'द'ग'द'वर'के'र'गुण'स'य'।
 द'य'प'र'दे'र'। वे'द'भा'वर'य'मे'द्वि'दे'वि'गुण'स'य'। स्मि'दे'वि'म'म'ल'र'गुण'स'य'। के'न'प्र'द'वर'के'र'गुण'स'य'। ग'स'र'य'द'य'प'र'दे'र'गुण'स'य'।

[illegible]

544

TI447 - 544

[illegible]

546

TI447 - 546

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

Халхын улсан эрдэмтэн Завсаа хэмээх хүрээ гавж Дамдин багшын талаар зуус дурьдвал:

Халхын түшээт хан аймгийн Дайчин бээсийн хошуу одоогын Дундговь аймгийн Дэлгэр Цогт сумын Тарцагтын Цагаан хад хэмээх бууцанд алдарт эрдэмтэн Завсаа Дамдин гавж 1867 оны бар сарын шинийн гурван буюу цагаан сарын шинийн гурван Дашням Балхоним давлсан сайн өдөр мэндэлжээ. Эцэг Шагдарын 5 дугаар хүү нь болон мэндэлжээ. Эзж Содномпил нь Сүхбаатар аймгийн Уулбаянаас нүүдэлж ирсэн Орлуудын гаралтай бүсгүй байжээ. Тэндэхийн Дайчин бээсийн хошуудаас лам Лувсанбалдансанжаажав бээр Дамдин жав хэмээн нэр хайрлаж хүйг нь угаасан багш нь болжээ. Ах лам Лувсанжамбаагаараа төвд үсгийн цагаан толгой заалгаж номынхоо гарваг эхэлсэн. Завсаа ламтан бөгөөдөө сэргэлэн цэвэр нэгэн байсан бөгөөд иймээс аав ээж нь лам болгохоор Дэлгэрцогтын Цахиуртын жасаанд 6 настай байхад нь шавьлуулжээ. Завсаа ламтан хоёр эвхтэй байсан. Төрүүлсэн эзж Содномпил мөн өрлөг эзж цагаан сүүтээ хөхүүлэн өсгөжээ. Балдансанжаажав ламтан шавьныхаа гоц эрдэмтэйт мэдэрч түүнийг 15 настай байхад нь Богдын хүрээний 3 их Дацангийн нэг Гунгаачойлон дацанд шавьлан суулгаж Эрхэмийн аймгийн Мунхүүр ламтанд шавь оруулснаар дом гавьж Чойрын 5 ухаанд тэлж боловсрон анги Дамбын гавж буюу тэр дацанг толгойлдог номтой лам нарын тоонд орж эхэлсэн.

Завсаа ламын нөхц нар гэвэл Ховдын Жамц Гунгаачойлон, Шүлгийн хэмээн алдаршсан Даш Чоймбал дацангийн анги Шагдар нар байв. 1904 оны Луу жил 13 дугаар Далай лам Түвдэнжамц бээр Хүрээнд морилох тэр үеэр Далай ламтай шүлгийн Шагдар гавж ном хаялцахаар очих гэхэд нь нийгэм хувиар Завсаа лам татгалзж байжээ. Гэвч Шагдар гавьж өөртөө эрдэж Далай ламтай дагсал хаяж дийлджээ. Тэгээд гарч ирээд чиний үгэнд ордог байж хэмээн гэмшилж байсан гэдэг. 1911 онд Богд хаант Монгол Улс байгуулагдаж тэр үеийн Засгийн газарт лам нарын нөлөө их байжээ. 5 яамны 2 яамны сайд лам хүн байсан. Сангийн яамны сайд Шагдаржав, Дотоод хэргийн яамны сайд Да Лам Цэрэнчимэд мөн Сангийн яамны дэд сайд Лувсанбалдан нар байжээ. Иймээс номтой лам нарыг дэмжж байв. Тэр үеийн сайчуудын нэг болох Завсаадамдин ламгаар Монгол Улсын түүхийг бич хэмээн 8 дугаар Богд Жавзандамба өөрийн биеээр дуудан уулзаж зарилга гарсан байдаг.

1921 оны Ардын хувьсгалын үед түр Монголын түүх бичих ажил зогсонг байдалд оржээ. Дараа нь Монголын түүх жаягийн комисс гурван гишүүнтэй байгуулагдахад гишүүд нь Сүхбаатарын багш Жамъянгүн Хэнтийн Батширээтийн Цэвээнжамсран Заваадамдин ламтан нар байв. Тэрээр Оросын Ширватский Рөрих нартай багш шавийн холбоотой бөгөөд европын соёлтой хамгийн түрүүнд танилцсан хүн юм. Тиймээс Хорчойнжин алдарт Монголын түүхийн сударыг бүтээхдээ европын түүхтэй нягт холбон бичсэн байдаг. Заваа ламтан Төвдийн Лхасын Утай Гүнбэнд очиж мөргөл хийж явахдаа тэндэхийн Дамсаг ууланд байх Хуйшаны хийдэд очиж сүмийн үүдэнд газар ух хэмээн айлдаж, тэр ухсан газраас нь архилогийн үнэт олдвор болох дөрвөн улсын хэлээр бичсэн пайзыг ил гаргасанд Хуйшаа нар машид их баярлан асар том нээлт хийсэн хэмээн түүхэнд тэмдэглэсэн байдаг. Манай Төр засгийн зүтгэлтэн Хатанбаатар Магсаржав шавь нь байжээ.

Нийт 17 боть ном Төвд хэл дээр туйрвасан бөгөөд Дуу Нянагын талаар дахин давтагдашгүй ном гаргасан байдаг. 1937 онд таалал төгссөн бөгөөд таалал төгсөхийн урьд шавь нараасаа Майдар эргэх болж байна уу хэмээн асууж Гандангийн Майдар эргэх тэр үед очиж Майдарт даган баясахад Майдрын даамал бээр Заваа ламыг хүндэтгэн Майдрын цувааг зогсоож байсан иймэл хүндтэй хүн. 1989 онд Дээрхийн гэгээнтэн 14 дүгээр Далай лам Данзанжамц Монголын бурхан шашинтны төв гандан хийд дээр морион саатах тэр үед Заваа ламын бичсэн Лавайн эгшиг хэмээх судрыг үзээд машид баярлан Монгол хүн тэгэх тусмаа хувьсгалын үед ийм гайхамшигтай бүтээл туйрвах гэж хэмээн хайлж байсан. Үнэхээр түүхэнд мөнхрөх эрдэмтэн хүн байсан байжээ.

Энэхүү товч намтарыг бичэн Заваа ламын нийт 17 боть номыг нийтийн хүртээл болгож буй Дундговь аймгийн Дэлгэрцогт сумын уугуул Дундговь хөгжил сангийн тэргүүн Түдэв овогтой Цэрэнпүрэв бээр та бүхэнд эрүүл энх урт удаан насалж номын цагаан буян дэлгэрэхийн ерөөл дэвшүүлэе.

Ум сайн амгалан болтугай.

書 號: **TI431~TI447**

詳細書名: 藏文: 《至尊·洛桑大央文集》; **ZAVAA LAMA 著作全集**

作 者: **ZAVAA DAMDIN GAVJ LAMA** (喀爾喀紅派學者 **ZAVAA**, 稱為 庫倫 **GAVJ DAMDIN** 經師)
1867 年出生於喀爾喀 **TUSHEET** 汗省 **DAICHIN BEIS** 鎮(現中戈壁省 **DELGERTSOGT** 縣 **TARTSAGT** 白岩)

宗 派: 藏傳格魯巴

作品收集整理編輯: 外蒙古中戈壁發展協會 會長 **TSERENPUREV TUDEV**

提供單位: 外蒙古 "**BARUDA**" CENTER; The WORLD "**SHIRBA**" CENTER FUND in MONGOLIA **VEN. TS. OTGONBAYAR**

適用單位: 蒙古 各佛寺道場

提供日期: **2008 年 4 月**

༡༡། རྣམ་དཀར་འདི་ཡིས་མཐའ་གྲས་ཞིང་གུན་གྱི། རྫོད་བཅུད་འབྱོར་བ་ལུལ་དུ་བྱུང་བ་དང་། བཀའ་དྲིན་ཞིང་མཆོག་བཞི་ཡི་དྲི་ལན་འཁོར། འཇན་འགྲོའི་གཡང་སར་ནམ་ཡང་མི་ལྷུང་ང་། འདི་
ལ་ཐོས་སོགས་བགྱིད་པའི་འབྲེལ་ཐོགས་གུན། བྱང་ཆུབ་སེམས་ཀྱི་བདུད་རྩིས་ཤེས་རྒྱུད་བརྒྱན། འདི་སྣང་འགགས་ཆོད་ག་པའི་ཞིང་བཟང་དུ། བརྟུས་ཏེ་སྦྱིས་ནས་དོན་གཉིས་མཐར་ཕྱིན་ག།
ཅེས་པ་འདི་ཡང་པར་སྦྱོན་གྱི་བྱ་བ་ཞག་འདིར་འགྲོ་གྲོན་གཏོང་མཁན་དང་། ལེགས་བཤད་འདི་ཉིད་འཛིན་འཆང་གྲོག་པ་སོགས་ཀྱི་དགོ་བསྟེན་སྦྱོན་ཆོག་ཏུ་བྲིས་པའོ། །སཏྲ་མཆོ་ལོ། །

༥ སྤར་འགྲེམ་དང་མཐུན་འགྱུར་སྦྱོར་མཁན། ཐུའི་ཕན་ནང་པའི་ཤེས་ཡོན་བདེ་ཅུ་ལྟན་ཆོགས།
ཐུག་དེབ་འདི་བཞིན་རིན་མེད་དུ་འགྲེམ་སྤེལ་བྱེད་པ་ལས་ཆོང་བསྐྱར་བྱེད་མི་ཆོག སྤར་སྦྱོན་བྱེད་ལུལ་ཐུའི་ཕན།
ཨོྲཱ་མཎྜུ་ཨོྲཱ་མཎྜུ་ཨོྲཱ་མཎྜུ།

DEDICATION OF MERIT

May the merit and virtue accrued from this work adorn the Buddha's Pure Land,
Repay the four great kindnesses above, and relieve the suffering of those on the three paths below.

May those who see or hear of these efforts generate Bodhi-mind,
Spend their lives devoted to the Buddha Dharma, and finally be reborn together in the Land of Ultimate Bliss.

NAMO AMITABHA! 南無阿彌陀佛 HOMAGE TO AMITABHA!

《藏文：至尊·洛桑大央文集 (ZAVAA LAMA 著作全集) 第十七冊》

Printed and donated for free distribution by **The Corporate Body of the Buddha Educational Foundation**

11F., 55 Hang Chow South Road Sec 1, Taipei, Taiwan, R.O.C.

Tel: 886-2-23951198 , Fax: 886-2-23913415, Email: overseas@budaedu.org , <http://www.budaedu.org>

This book is for free distribution, it is not for sale. Printed in Taiwan, 1,000 copies, January 2009

ཕྱག་དཔེ་འདི་ཚོས་སྒྲིན་དུ་འབྲུལ་རྒྱུ་ལས། ཚོར་བསྐྱར་མི་ཚོགས་པ་དགོངས་འཇགས་ལུ།

TI447 - 7585